13 श्याम नारायण पाण्डेय

श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी को संवत् 1964 (सन् 1907 ई0) में डुमराँव गाँव, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा के बाद श्याम नारायण पाण्डेय संस्कृत अध्ययन के लिए काशी (वर्तमान बनारस) गये। काशी से इन्होंने साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वभाव से सात्त्विक, हृदय से विनोदी और आत्मा से परम निर्भीक स्वभाव वाले पाण्डेय जी के स्वस्थ-पुष्ट व्यक्तित्व में शौर्य, सत्त्व और सरलता का अनूठा मिश्रण था। संस्कार द्विवेदीयुगीन, दृष्टिकोण उपयोगितावादी और भाव-विस्तार मर्यादावादी थे। लगभग दो दशकों से ऊपर वे हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर अत्यंत लोकप्रिय एवं समादृत रहे। इन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परम्परा को खड़ी बोली में प्रतिष्ठित किया। इनकी मृत्यु 1991 ई0 में हुई थी।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म** –1907 ई.
- **जन्म भूमि**–डुमराँव गाँव, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
- **मृत्यु** –1991 ई.
- **कर्म-क्षेत्र** –काव्य रचना
- **मुख्य रचनाएँ**–'हल्दी घाटी', 'जौहर', 'तुमुल', 'रूपान्तर', 'आरती' तथा 'जय हनुमान' आदि।
- **पुरस्कार** –'देव पुरस्कार'
- **प्रसिद्धि** –वीर रस के कवि
- **अन्य** –'जौहर' द्वितीय महाकाव्य
- **भाषा** – शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली** –मुक्तक और प्रबन्ध
- **साहित्य में स्थान**–राष्ट्रकवि के रूप में स्थान प्राप्त है।

श्याम नारायण पाण्डेय द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैं–

1. 'हल्दी घाटी' (1937-39 ई0)
2. 'जौहर' (1939-44 ई0)
3. 'तुमुल' (1948 ई0) – यह पुस्तक 'त्रेता के दो वीर' नामक खण्ड-काव्य का ही परिवर्धित संस्करण है।
4. 'रूपांतर' (1948 ई0)
5. 'आरती' (1945-46 ई0)
6. 'जय हनुमान' (1956 ई0) उनकी प्रमुख प्रकाशित काव्य पुस्तकें हैं।
7. 'माधव', 'रिमझिम', 'आँसू के कण' और 'गोरा वध' उनकी प्रारम्भिक लघु कृतियाँ हैं।
8. 'परशुराम' अप्रकाशित काव्य है तथा 'वीर सुभाष' रचनाधीन ग्रंथ है।

भाषा-नाद से आगे बढ़कर भावोत्साह की दृष्टि से कवि ने रचना को रसमय बनाया है। यहाँ भाषा-नाद और आंतर भाव का सामंजस्य कवि-कला की नूतनता का प्रमाण है। बीच-बीच में सुन्दर प्रकृति-वर्णनों की उत्फुल्ल योजना हुई है। भाषा तत्सम प्रधान होकर भी प्रवाहमय और बोलचाल में उर्दू शब्दों को अपनाती चली है। तलवार, घोड़ा, बर्छे आदि के फड़का देने वाले वर्णन अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। ग्रंथ में कुल 17 सर्ग हैं। इस रचना पर पाण्डेय जी को 'देव पुरस्कार' भी मिला था।

'हल्दी घाटी' महाकाव्य महाराणा प्रताप और अकबर के बीच हुए प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध पर लिखा गया इनका प्रथम महाकाव्य है। प्रताप के इतिहास प्रसिद्ध शौर्य, त्याग, आत्म-बलिदान, स्वातंत्र्य-प्रेम एवं जातीय-गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए कवि ने मध्यकालीन राजपूती मूल्यों को अत्यंत श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति और पूजा के छन्दपुष्प अर्पित किये हैं। वीर-पूजा इस काव्य की सत्प्रेरणा और जातीय गौरव का उद्बोधन इसका लक्ष्य है।

हल्दीघाटी

मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।।
चढ़ कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।
चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।

सेना-नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।
क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।

क्षण भीषण हलचल मचा-मचा,
राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।
वह हाथी दल पर टूट पड़ा,
मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा
शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।
क्षण उछल गया अरि घोड़े पर
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण भर में गिरते रुण्डों से,
मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों के विकल वितुण्डों से,
पट गई भूमि नरमुण्डों से।।

ऐसा रण राणा करता था,
पर उसको था सन्तोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह,
पर कम होता था रोष नहीं।।

कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ?

||अभ्यास प्रश्न||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) मेवाड़-केसरी देख रहा .... मानो प्रत्यक्ष कपाली था।
(ख) चढ़ चेतक पर तलवार उठा .... दूने तिगुने उत्साह भरे। **(2019AG)**
(ग) क्षण मार दिया कर कोड़े से .... रणचण्डी जीभ पसार बढ़ी। **(2019AG)**
(घ) वह हाथी दल पर टूट पड़ा .... बरछे पर उसको रोक दिया।
(ङ) क्षण उछल गया.........................पट गयी भूमि नरमुण्डों से।
(च) ऐसा रण, राणा करता था.........................मुगलों का अभिमान कहाँ?
(छ) जो साहस कर बढ़ता उसको ....हो गया घोड़े पर। **(2020MD)**
2. श्याम नारायण पाण्डेय का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2019AB,AF,20MG,MA)**
3. श्याम नारायण पाण्डेय के साहित्यिक अवदान एवं भाषा पर प्रकाश डालिए।
4. 'हल्दी घाटी' कविता का सारांश लिखिए।
5. 'हल्दी घाटी' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
6. 'हल्दी घाटी' शीर्षक कविता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. 'हल्दी घाटी' कविता में वीर रस से युक्त पंक्तियों को उद्धृत कीजिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों में रस का उल्लेख कीजिए—
क्षण में गिरते रुण्डों से, मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों के विकल वितुण्डों से, पट गयी भूमि नरमुण्डों से।।

➡ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) पाठ की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से श्याम नारायण पाण्डेय के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
(ii) वीर रस पर आधारित अन्य कविता को कंठस्थ करके लिखें।

टिप्पणी

➡ हल्दी घाटी

मेवाड़ केसरी = राणा प्रताप। **रण** = युद्ध। **मान-रक्त** = अकबर के प्रधान सेनापति मानसिंह का रक्त। **रक्त का प्यासा** = जान का दुश्मन। **प्रत्यक्ष** = साक्षात्। **कपाली** = शिव का संहारक रूप जिनके बाएँ हाथ में कपाल है। **चेतक** = राणा प्रताप का घोड़ा। **भूतल** = धरती। **जवानी** = युवावस्था। **उत्साह** = साहस, धैर्य। **कौशल** = पराक्रम। **रक्त** = खून। **वेग** = तेज। **नभ** = आकाश। **बरछे** = भाला। **बैरी** = दुश्मन। **रुण्डों** = धड़ों। **मुण्ड** = सिर। **शुण्ड** = सूँड़। **रोष** = क्रोध। **मान** = मानसिंह। **रक्त-स्नान** = खून में नहाना। **कर** = हाथ। **राणाकर** = राणा के हाथ। **पवि** = वज्र, भाले की नोक। **शोणित** = रक्त। **कटाक्ष** = टेढ़ी नजर। **अरि घोड़े पर** = शत्रु के घोड़े पर। **विकल** = व्याकुल, बेचैन। **वितुण्ड** = हाथी। **नरमुण्ड** = मनुष्यों के कटे सिर। **मान** = अकबर का सेनापति मानसिंह।

●●

परिशिष्ट

|| काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व ||

(क) रस

आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा कहा है। कविता पढ़ने अथवा नाटक देखने से पाठक या दर्शक को जो आनन्द प्राप्त होता है, वह रस कहलाता है।

रस के चार अंग माने गये हैं—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

➡ (i) स्थायी भाव

सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। यही भाव रसत्व को प्राप्त होते हैं।

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने स्थायी भाव नौ माने हैं। उन्हीं के आधार पर नौ रस माने जाते हैं—

स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव	रस
1. रति	शृंगार	6. भय	भयानक
2. हास	हास्य	7. जुगुप्सा	वीभत्स
3. शोक	करुण	8. विस्मय	अद्भुत
4. क्रोध	रौद्र	9. निर्वेद	शान्त
5. उत्साह	वीर		

बाद में 'वात्सल्य' नाम का दसवाँ रस भी स्वीकार किया गया। इसका भी स्थायी भाव रति ही है। जब रति बालक के प्रति होती है तो वात्सल्य और जब भगवान् के प्रति होती है तो 'भक्ति' रस की निष्पत्ति होती है।

➡ (ii) विभाव

जिसके कारण सहृदय को रस प्राप्त होता है, वह विभाव कहलाता है अर्थात् स्थायी भाव का कारण विभाव है।

विभाव दो प्रकार के होते हैं—(क) आलम्बन विभाव, (ख) उद्दीपन विभाव।

➡ (क) आलम्बन विभाव

वह कारण है जिस पर भाव अवलम्बित रहता है अर्थात् जिस व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आलम्बन कहते हैं और जिस व्यक्ति के मन में स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं उसे आश्रय कहते हैं। पुत्र रोहिताश्व की मृत्यु पर विलाप करती हुई शैव्या आश्रय है और रोहिताश्व आलम्बन है। यहाँ शोक स्थायी भाव है।

➡ (ख) उद्दीपन विभाव

जो आलम्बन द्वारा उत्पन्न भावों को उद्दीप्त करते हैं, उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं, जैसे भय स्थायी भाव को उद्दीप्त करने के लिए सिंह का गर्जन, उसका खुला मुँह, जंगल की भयानकता आदि उद्दीपन विभाव हैं।

➡ (iii) अनुभाव

स्थायी भाव के जागरित होने पर आश्रय की बाह्य चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं, जैसे भय उत्पन्न होने पर हक्का-बक्का हो जाना, रोंगटे खड़े होना, काँपना, पसीने से तर हो जाना आदि।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि बिना किसी भावोद्रेक के केवल भौतिक परिस्थिति के कारण यदि ये चेष्टाएँ दिखलायी पड़ती हैं तो उन्हें अनुभाव नहीं कहेंगे। जैसे जाड़े के कारण काँपना, गर्मी से पसीना निकलना आदि।

➡ (iv) संचारी भाव

आश्रय के मन में उठनेवाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। ये मनोविकार पानी के बुलबुलों की भाँति बनते-मिटते रहते हैं, जबकि स्थायी भाव अन्त तक बने रहते हैं।

प्रत्येक रस का स्थायी भाव तो निश्चित है पर एक ही संचारी अनेक रसों में हो सकता है, जैसे शंका शृंगार में भी हो सकती है और भयानक में भी, स्थायी भाव भी दूसरे रस में संचारी भाव हो जाते हैं। जैसे हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' शृंगार रस में संचारी भाव बन जाता है। संचारी भाव को 'व्यभिचारी भाव' भी कहा जाता है।

हास्य और करुण रस

ऊपर दस रसों के नाम बताये जा चुके हैं, किन्तु पाठ्यक्रम में हास्य और करुण रस ही हैं, अतः इनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है—

➡ (i) हास्य रस

(2016CA,CB,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,AE,18HA,HF, 19AA,AB,AC,AE,AF,AG,20MC,MD,MB,MG,MF,MA)

"विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से पूर्णता को प्राप्त हास नामक मनोविकार हास्य रस उत्पन्न करता है।" विकृत रूप, आकार, वेश, वाणी और चेष्टाओं को देखकर 'हास' नामक मनोविकार के परिपुष्ट होने पर 'हास्य रस' की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण—

हँसि-हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को,
पाहुनी जे आवैं हिमाचल के उछाह मैं।
कहै 'पदमाकर' सुकाहु सों कहै को कहा,
जोई जहाँ देखै सो हँसेई तहाँ राह मैं।
मगन भयेई हँसैं नगन महेस ठाढ़े,
और हँसैं ऐऊ हँसि हँसी के उमाह मैं।
सीस पर गंगा हँसैं, भुजनि भुजंगा हँसैं,
हास ही को दंगा भयो नंगा के विवाह मैं।

इस छन्द में महादेव जी आलम्बन हैं क्योंकि उन्हीं को देखकर हँसी आती है। उनकी विलक्षण वेशभूषा उद्दीपन है। अतिथि स्त्रियों का हँसना, भागना, खड़ा रह जाना आदि अनुभाव हैं। भय, हर्ष और चपलता, संचारी भाव हैं। इनके संयोग से हास्य रस की निष्पत्ति हुई है।

अन्य उदाहरण—

बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गोतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे॥
ह्वैहैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥

➡ (ii) करुण रस

(2016CA,CB,CC,CD,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,18HA,HF, 19AA,AC,AD,AE,AG,20MD,MB,MG,MF,MA)

'शोक' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से करुण रस की निष्पत्ति होती है अर्थात् "प्रिय वस्तु तथा व्यक्ति के नाश या अनिष्ट से हृदय में उत्पन्न क्षोभ को करुण रस कहते हैं।"

उदाहरण—श्रवण की मृत्यु पर उनकी माता की यह दशा करुण रस की निष्पत्ति करती है—

"मणि खोये भुजंग-सी जननी,
फन-सा पटक रही थी शीश,
अन्धी आज बनाकर मुझको,
किया न्याय तुमने जगदीश?"

इसमें **स्थायी भाव**—शोक, **विभाव (आलम्बन)**—श्रवण, **आश्रय**—पाठक, **उद्दीपन**—दशरथ की उपस्थिति, **अनुभाव**—सिर पटकना, **संचारी भाव**—स्मृति, विषाद, प्रलाप आदि। इनके संयोग से करुण रस की निष्पत्ति हुई है।

अन्य उदाहरण– शोक विकल सब रोवहिं रानी।
रूप राशि बल तेज बखानी ।।

|| अभ्यास प्रश्न ||

प्रश्न 1. निम्नलिखित पक्तियों में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव लिखिए–
'चहुँ दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत, अँसुवन बहत पनारे।'

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है–
जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेही न बिलोकी भूली।।
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में कौन-सा रस है? उसका स्थायी भाव लिखिए–
"हा! वृद्धा के अतुल धन, हा! वृद्धता के सहारे!
हा! प्राणों के परमप्रिय, हा! एक मेरे दुलारे।"
हे जीवितेश! उठो, उठो यह नींद कैसी घोर है,
है क्या तुम्हारे योग्य, यह तो भूमि-सेज कठोर है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है–
पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को हैं?'

प्रश्न 5. निम्नलिखित कविता में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव बताइए–
ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू करुनाकरि कानन को पग धारे।।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है तथा उसका स्थायी भाव क्या है?
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फन करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बन्धु बिन तोही। जौ जड़ दैव जियावह मोही।।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का उल्लेख कीजिए–
हँसि-हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर कों,
पाहुनी जे आवै हिमाचल के उछाह में।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का उल्लेख कीजिए–
हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न अवगुण बकसहु मेरा।।
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहैं न तेते।।
कर गहि केस करैं जो घाता, तऊ न हेत उतारै माता।
कहैं कबीर एक बुधि विचारी, बालक दुखी दुखी महतारी।।

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव लिखिए–
'ब्रज के बिरही लोग दुखारे'

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है तथा उसका स्थायी भाव क्या है?
अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले भी न चुम्बन शून्य कपोल,
हाय रुक गया यहाँ संसार, बना सिंदूर अंगार,
वातहत लतिका यह सुकुमार, पड़ी है छिन्नाधार।

प्रश्न 11. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम तथा स्थायी भाव लिखिए–

पतिसिर देखत मन्दोदरी। मुरछित बिकल धरनि खसि परी।
जुबति वृंद रोवत उठि धाईं, तेहि उठाई रावन पहिं आईं।।

(ख) छन्द

छन्द काव्य के प्रवाह को लययुक्त, संगीतात्मक, सुव्यवस्थित और नियोजित करता है। छन्दबद्ध होकर भाव अधिक प्रभावशाली, अधिक हृदयग्राही और स्थायी हो जाता है। छन्द काव्य को स्मरण योग्य बना देता है।

छन्द के प्रत्येक चरण में वर्णों का क्रम अथवा मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

➡ मात्रा

मात्रा भेद से वर्ण दो प्रकार के होते हैं—ह्रस्व एवं दीर्घ। वर्ण के उच्चारण काल में जो समय लगता है उसे 'मात्रा' कहा जाता है। अ, इ, उ, ऋ के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी एक मात्रा होती है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा इनके संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी दो मात्राएँ मानी गयी हैं। व्यंजन स्वतः उच्चरित नहीं हो सकते हैं। अतः मात्रा की गणना स्वरों के आधार पर होती है। ह्रस्व और दीर्घ को पिंगलशास्त्र में क्रमशः लघु और गुरु कहते हैं। लघु का चिह्न '।' है तथा गुरु का चिह्न 'ऽ' है।

➡ यति (विराम)

छन्द की एक लय होती है, उसे गति या प्रवाह भी कहते हैं। लय का ज्ञान अभ्यास पर निर्भर है। छन्दों में विराम के नियम का पालन भी किया जाता है—छन्द के प्रत्येक चरणों में उच्चारण करते समय मध्य या अन्त में जो विराम होता है उसे 'यति' कहा जाता है।

➡ पाद या चरण

छन्द में प्रायः चार पंक्तियाँ होती हैं, छन्द की एक पंक्ति का नाम 'पाद' है, इसी पाद को उस छन्द का चरण कहा जाता है। पहले और तीसरे चरण को विषम तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं–

ककुभ शोभित गोरज बीच से।
निकलते ब्रज बल्लभ यों लसे।
कदन ज्यों करके दिशि कालिमा।
विलसता नभ में नलिनीश है।

इस छन्द में चार पंक्तियाँ (चरण) हैं। एक-एक पंक्ति चरण या पाद है। कुछ चार चरणवाले छन्दों को दो पंक्तियों में भी लिख देने की प्रथा चल पड़ी है।

➡ गुरु-लघु

(1) अनुस्वारयुक्त (ं) वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए—'संत' और 'हंस' शब्द के सं और हं वर्ण गुरु हैं। **(2)** विसर्ग (:) से युक्त वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए अतः शब्द में 'तः' गुरु वर्ण है। **(3)** संयुक्ताक्षर से पूर्व का लघु वर्ण गुरु माना जाता है, जैसे 'गन्ध' शब्द में 'न्ध' संयुक्ताक्षर है, अतः 'ग' लघु होते हुए भी गुरु (दो मात्रा का) है। परन्तु जब संयुक्ताक्षर से पूर्व वर्ण पर अधिक बल नहीं रहता, तब वह लघु ही माना जाता है। जैसे 'तुम्हारे' में 'तु' लघु है। **(4)** चन्द्रबिन्दु से युक्त लघु वर्ण लघु ही रहता है जैसे—'हँसना' का 'हँ' लघु है। **(5)** कभी-कभी दीर्घ वर्ण भी आवश्यकतानुसार ह्रस्व पढ़ा जाता है, जैसे—**'करत जो वन सुर नर मुनि भावन'** में 'जो' दीर्घ ही पढ़ा जायगा। इसी प्रकार **'अवधेश के द्वारे सकारे गयी'** में 'के' दीर्घ होते हुए भी लघु ही पढ़ा जायगा। तात्पर्य यह है कि किसी ध्वनि का लघु अथवा गुरु होना उसके उच्चारण में लिए गये समय पर निर्भर है।

छन्द के प्रकार

1. वर्णिक, 2. मात्रिक, 3. मुक्त

1. वर्णिक छन्द—वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण का निर्माण वर्णों की एक निश्चित संख्या एवं लघु गुरु के क्रम के अनुसार होता है। वर्णिक वृत्तों में अनुष्टुप्, द्रुतविलम्बित, मालिनी, शिखरिणी आदि छन्द प्रसिद्ध हैं।

2. मात्रिक छन्द—मात्रिक छन्द वे हैं, जिनकी रचना में चरण की मात्राओं की गणना होती है। दोहा, सोरठा, रोला, चौपाई आदि मात्रिक छन्द हैं।

3. मुक्त छन्द—हिन्दी में स्वतन्त्र रूप से आज लिखे जा रहे छन्द मुक्त छन्द हैं, जिनमें वर्ण मात्रा का कोई बन्धन नहीं है।

मात्रिक छन्दों में पाठ्यक्रमानुसार दोहा और सोरठा का लक्षण एवं उदाहरण निम्नलिखित है—

➡ (1) सोरठा

(2016CA,CB,CD,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,18HA,HF, 19AA,AC,AE,AG,20MD,MB,MG,MF,MA)

यह दोहे का उल्टा होता है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

ऽ । । । । । । । ऽ ।
जो सुमिरत सिधि होइ, 11 मात्राएँ
। । ऽ । । । । । । । । ।
गननायक करिवर बदन। 13 मात्राएँ
। । । । ऽ । । ऽ ।
करहु अनुग्रह सोय, 11 मात्राएँ
ऽ । ऽ । । । । । । । ।
बुद्धि-रासि सुभ-गुन-सदन।। 13 मात्राएँ

अन्य उदाहरण—

लिखकर लोहित लेख, डूब गया दिनमणि अहा।
व्योम सिन्धु सखि देख, तारक बुदबुद दे रहा।।

अथवा *बंदऊँ मुनि पद कंजु, रामायन जेहिं निरमयउ।*
सरवर सुकोमल मंजु, दोष रहित दूषन सहित।।

➡ (2) रोला

(2016CA,CB,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AE,18HA,HF, 19AA,AB,AD,AE,20MC,MD,MB,MG,MF,MA)

यह सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण—

। । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । । । । । । । ऽ । ।
कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि बनि बावन वीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै, ग्यारह होत तीन पाँचहिं बिसरावत।।

भारतेन्दु : गंगावतरण

इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ हैं। 11-13 पर यति है, अतः यह छंद रोला है।

||अभ्यास प्रश्न||

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित छन्दों के नाम लिखिए–

मैं समुझ्यौ निरधार, यह जगु काँचो काँच सौ।
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखियत जहाँ।।

उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 2. भरत चरित करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं।
सियाराम पद प्रेम, अवसि होइ मन रस विरति।।

उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 3. जो सुमरित सिधि होई गननायक करिवर बदन।
करहु अनुग्रह सोई, बुद्धिरासि सुभ-गुन-सदन।।

उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित में प्रयुक्त छन्द को पहचानकर लिखिए–

बंदहुँ मुनि पद कंज, रामायन जेहि निरमयउ।
सरवर सुकोमल मंजु, दोस रहित दूसन सहित।।

(ग) अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ानेवाले उपकरणों को अलङ्कार कहते हैं। इसके प्रयोग से शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है। अतः अलङ्कार को काव्य का आवश्यक अंग माना गया है।

अलङ्कार के दो भेद किये गये हैं—1. शब्दालङ्कार, 2. अर्थालङ्कार।

जब केवल शब्दों में चमत्कार पाया जाता है तब शब्दालङ्कार और जब अर्थ में चमत्कार होता है तब अर्थालङ्कार कहलाता है। नीचे कुछ प्रमुख अलङ्कारों का वर्णन किया जा रहा है। उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलङ्कार ही पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं—

(i) उपमा

(2016CA,CF,CG,17AB,AC,AE,AG,18HA,HF,19AA,AB,AD,AG, 20MB,MG,MF,MA)

"जहाँ दो भिन्न पदार्थों अथवा व्यक्तियों में समान गुण आदि के कारण सादृश्य या साधर्म्य की स्थापना की जाती है, वहाँ उपमा अलङ्कार होता है।" उपमा अलङ्कार के चार अंग होते हैं—

➡ (क) उपमेय या प्रस्तुत

वह वस्तु अथवा व्यक्ति जिसकी किसी दूसरी वस्तु अथवा व्यक्ति से तुलना की जाती है। दूसरे शब्दों में वर्णन के विषय को 'उपमेय' कहते हैं।

➡ (ख) उपमान या अप्रस्तुत

जिस वस्तु अथवा व्यक्ति से उपमेय की समता की जाती है उसे 'उपमान' कहते हैं।

➡ (ग) साधारण धर्म

वह गुण जिसके कारण उपमेय तथा उपमान में साम्य दिखाया जाये; 'साधारण धर्म' कहलाता है।

➡ (घ) वाचक

वह पद या शब्द जिसके द्वारा उपमेय तथा उपमान की समता प्रकट हो, उसे 'वाचक' कहते हैं।

उदाहरण—

'करि कर सरिस सुभग भुजदण्डा'। यहाँ 'भुजदण्डा' **उपमेय**, 'करि कर' (सूँड़) **उपमान**, 'सरिस' **वाचक** तथा 'सुभग' **साधारण धर्म** है। इस उदाहरण में उपमा के चारों अंग विद्यमान हैं। अतः यह पूर्णोपमा है।

'पीपर पात सरिस मन डोला' भी पूर्णोपमा का उदाहरण है। यदि उपमा का कोई अंग नहीं होता तो वह लुप्तोपमा कहलाती है।

(ii) रूपक (2016CA,CB,CC,CD,CE,CG,17AA,AD,AF,18HA,HF,19AA,AC,AE,AG,20MD,MB,MA)

जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलङ्कार होता है। रूपक अलङ्कार में उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं रहता।

उदाहरण—

'चरण कमल बन्दौं हरि राइ।''

इस उदाहरण में 'चरण' प्रस्तुत और 'कमल' अप्रस्तुत है। चरण में कमल का आरोप है।

अन्य उदाहरण—

उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

(iii) उत्प्रेक्षा (2016CB,CC,CD,CF,17AB,AC,AD,AE,AF,AG,19AA,AC,AD,AE,20MC,MD,MB,MF)

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है। जनु, जानो, मानो आदि इसके वाचक शब्द हैं।

उदाहरण—

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु, स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

इस दोहे में 'पीतु पटु' में आतपु तथा 'स्याम सलौनै गात' में नीलमनि सैल की सम्भावना प्रकट की गयी है और 'मनौ' शब्द का प्रयोग भी है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

अन्य उदाहरण—

1. *उभय बीच सिय सोहति कैसी, ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।*
बहुरि कहउँ छबि जस मन बसई, जनु मधु मदन मध्य रति लसई।

2. *लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।*
निकसे जनु-जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ।।

3. *चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट-पट झीन।*
मानहु सुरसरिता बिमल जल उछरत जुग मीन।।

|| अभ्यास प्रश्न ||

प्रश्न 1. निम्न पद्यांशों में से अलंकार छाँटिए–
(क) चरन कमल बन्दौं हरि राई।
(ख) चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी। तिलक रेख सोभा जनु चांकी।।
(ग) पीपर पात सरिस मन डोला।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में अलंकार बताइए तथा उनके लक्षण भी लिखिए–
(क) धाये धाम काम सब त्यागी। मनहुं रंक निधि लूटन लागी।।
(ख) मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।

प्रश्न 3. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइए–
(क) पुनि पुनि बन्दौं गुरु के पद जलजात।
(ख) सोहत ओढ़े पीत पटु स्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

प्रश्न 4. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइए–

(क) अरुन सरोरुह कर-चरन, दृग खंजन मुख चन्द।

(ख) मनो रासि महातम तारक में।

(ग) जौ चाहत चटक न घटै मैलो होइ न मित्त।

(घ) बन्द नहीं अब भी चलते हैं,
नियति-नटी के कार्य-कलाप।

प्रश्न 5. निम्न में 'उपमेय' तथा 'उपमान' बताइए। अलंकार भी लिखिए–

(क) अनुराग तड़ाग में भानु उदै।
बिगसी मनो मंजुल कंज-कली।

(ख) स्रम-सीकर सांवरि देह लसै।
मनो रासि महातम तारक में।

प्रश्न 6. पीपर-पात सरिस मन डोला।
उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।

प्रश्न 7. 'मुख मयंक सम मंजु मनोहर'
उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"लोल कपोल झलक कुंडल की, यह उपमा कछु लागत।
मानहुँ मकर सुधारस क्रीड़त, आपु-आपु अनुरागत।।"

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत।"

प्रश्न 10. निम्नलिखित कविता में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा लिखिए।
'बढ़त-बढ़त संपति सलिलु, मन सरोजु बढ़ि जाए।'

प्रश्न 11. बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी।
उपर्युक्त कविता में बताइए कौन-सा अलंकार है?

प्रश्न 12. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए तथा उसका लक्षण भी लिखिए–
"धाए धाम काम सब त्यागी।
मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।।"

प्रश्न 13. "सोहत ओढ़े पीत पटु, स्याम सलोने गात।
मनौ नील-मणि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।"
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 14. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"लाल चेहरा है नहीं, फिर लाल किसके।"

प्रश्न 15. निम्नलिखित दोहों के सामने उन दोहों में आये हुए अलंकारों के नाम लिखिए। यदि किसी दोहे में एक से अधिक अलंकार हैं तो सभी अलंकारों के नाम लिखिए–

(क) मनौ नीलमणि-सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

(ख) जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होई न मित्त।

प्रश्न 16. निम्नलिखित दोहे में कौन-सा अलंकार है? इसका लक्षण भी लिखिए।
चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट पट झीन।
मानहु सुरसरिता बिमल, जल उछरत जुग मीन।।

|| हिन्दी काव्य ||

भूमिका

काव्य उस छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। कविता में कुछ बाह्य तत्त्व हैं तो कुछ आन्तरिक। बाह्य तत्त्व हैं—शब्दों की लय, तुक, छन्द, शब्दों की योजना, भाषा एवं अलङ्कार तथा आन्तरिक तत्त्व हैं—व्यापकता, कल्पनाशीलता, रसात्मकता, सौन्दर्यबोध एवं भावों का प्रकटीकरण। आनुषंगिक रूप से कविता भाषा को भी समृद्ध करती है, किन्तु मूलतः वह आनन्द का साधन है। तर्क, युक्ति एवं चमत्कार मात्र का आश्रय न लेकर कवि रसानुभूति का समवेत प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः कविता में यथार्थ का यथारूप चित्रण नहीं मिलता, वरन् यथार्थ को कवि जिस रूप में देखता है तथा जिस रूप में उससे प्रभावित होता है, उसी का चित्रण करता है। कवि का सत्य सामान्य सत्य से भिन्न प्रतीत होता है। वह इसी प्रभाव को दिखाने के लिए अतिशयोक्ति का सहारा भी लेता है। अतः काव्य में अतिशयोक्ति दोष न होकर अलङ्कार बन जाता है।

➨ कविता के विषय

मूलतः मानव ही काव्य का विषय है। जब कवि पशु-पक्षी अथवा निसर्ग का वर्णन करता है, तब भी वह मानव-भावनाओं का ही चित्रण करता है। व्यक्ति और समाज के जीवन का कोई भी पक्ष काव्य का विषय बन सकता है। आज के कवि का ध्यान जीवन के सामान्य एवं उपेक्षित पक्ष की ओर भी गया है। उसके विषय महापुरुषों तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु वह छिपकली, केचुआ आदि पर भी काव्य-रचना करने लगा है। कवि के उन्नत विषय, भाव, विचार, आदर्श जीवन और उसका सन्देश कविता को स्थायी, महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी बनाने में अधिक समर्थ होते हैं।

➨ कविता और संगीत

कविता छन्द-बद्ध रचना है। छन्द उसे संगीत प्रदान करता है। छन्द की लय यति-गति, वर्णों की आवृत्ति, तुकान्त पदावली इस संगीत के प्रमुख तत्त्व हैं। किन्तु संगीत और काव्य के क्षेत्र अलग-अलग हैं। संगीत का आनन्द मूलतः नाद का आनन्द है, जबकि काव्य में मूल आनन्द अर्थ का है। कविता में नाद का सौन्दर्य अर्थ का ही अनुगामी होता है। कलात्मक एवं आनन्दानुभूतिमयी छन्द-मुक्त रचनाओं को भी काव्य में स्थान मिलने लगा है।

➨ सादृश्य-विधान

कविता भाव-प्रधान होती है। अपने भावों को पाठक के हृदय तक पहुँचाने के लिए कवि वर्ण्य-विषयों के सदृश अन्य वस्तु-व्यापार प्रस्तुत करता है। जैसे–कमल के सदृश नेत्र, चन्द्र-सा मुख, सिंह के समान वीर। इसी को सादृश्य-विधान या अप्रस्तुत-योजना कहते हैं।

➨ शब्द-शक्ति

शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति ही शब्द-शक्ति है। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द-शक्ति है। शब्द-शक्तियाँ तीन हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना। अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है तथा मुख्यार्थ में बाधा होने पर लक्षणा का आश्रय लेना पड़ता है। अन्त में व्यञ्जना में अर्थ मिलता है। कवि का अभिप्रेत अर्थ मुख्यार्थ तक ही सीमित नहीं रहता। काव्यानन्द लेने हेतु शब्दों के लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना आवश्यक होता है। कवि फूलों को हँसता हुआ और मुख को मुरझाया हुआ कहना पसन्द करते हैं, जबकि सामान्यतः हँसना मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है और मुरझाना फूल के लिए। परन्तु मुख्यार्थ जाने बिना हम लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तक नहीं पहुँच सकते। कवि विवेकपूर्ण सावधानी से शब्द-चयन करता है। कविता के शब्दों का आग्रह जिधर सहज रूप में बढ़े, पाठक अथवा श्रोता को उधर ही अभिमुख होना चाहिए। शब्दों के संयोजन द्वारा ही कविता में नाद-सौन्दर्य भी उत्पन्न होता है।

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व हैं—

भाव-सौन्दर्य, विचार-सौन्दर्य, नाद-सौन्दर्य और अप्रस्तुत-योजना का सौन्दर्य।

➡ भाव-सौन्दर्य

प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्रण ही भाव-सौन्दर्य है। भाव-सौन्दर्य को ही साहित्यशास्त्रियों ने रस कहा है। प्राचीन आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है—'रसो हि आत्मा काव्यस्य'।

शृङ्गार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, शान्त, भयानक, अद्‌भुत और वीभत्स—नौ रस कविता में माने जाते हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। सूर के 'बाल-वर्णन' में वात्सल्य का, 'गोपी-प्रेम' में शृङ्गार का, भूषण की 'शिवा बावनी' में वीर रस का चित्रण है। भाव, विभाव और अनुभाव के योग से रस की निष्पत्ति होती है।

➡ विचार-सौन्दर्य

विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा आती है। गरिमापूर्ण कविताएँ प्रेरणादायक भी सिद्ध होती हैं। उत्तम विचारों एवं नैतिक मूल्यों के कारण ही कबीर, रहीम और तुलसी के नीतिपरक दोहे और गिरधर की कुण्डलियाँ अमर हैं। इनमें जीवन की व्यावहारिक शिक्षा, अनुभव तथा प्रेरणा छिपी है।

आज की कविता में विचार-सौन्दर्य के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। मैथिलीशरण गुप्त की कविता में राष्ट्रीयता और देश-प्रेम आदि का विचार-सौन्दर्य है। 'दिनकर' के काव्य में सत्य, अहिंसा एवं मानवीय मूल्य है। जयशंकर प्रसाद की कविता में राष्ट्रीयता, संस्कृति और गौरवपूर्ण अतीत के रूप में वैचारिक सौन्दर्य देखा जा सकता है। आधुनिक प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कवि जन-साधारण का चित्रण, शोषितों एवं दीन-हीनों के प्रति सहानुभूति तथा शोषकों के प्रति विरोध आदि प्रगतिवादी विचारों का ही वर्णन करते हुए देखे जाते हैं।

➡ नाद-सौन्दर्य

कविता में छन्द नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करता है। छन्द से लय, तुक, गति और प्रवाह का समावेश सही है। वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से कविता में नाद-सौन्दर्य और संगीतात्मकता अनायास ही आ जाती है एवं कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। यह सौन्दर्य श्रोता और पाठक के हृदय में आकर्षण पैदा करता है। वर्णों की बार-बार आवृत्ति (अनुप्रास), विभिन्न अर्थवाले एक ही शब्द के बार-बार प्रयोग (यमक) से कविता में नाद-सौन्दर्य का समावेश होता है, जैसे—

खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा॥

यहाँ पक्षियों के कलरव में नाद-सौन्दर्य देखा जा सकता है। कवि ने शब्दों के माध्यम से नाद-सौन्दर्य के साथ पक्षियों के समुदाय और हिलते हुए पत्तों का चित्र प्रस्तुत किया है। **'घन घमण्ड नभ गरजत घोरा'** अथवा **'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि'** में मेघों का गर्जन-तर्जन तथा नूपुर की ध्वनि का क्रमशः सुमधुर स्वर है। इन दोनों ही स्थलों पर नाद-सौन्दर्य ने भाव भी स्पष्ट किया है और नाद-बिम्ब को साकार कर भाव को गरिमा प्रदान किया है।

बिहारी के निम्नलिखित दोहे में वायुरूपी कुंजर की चाल का वर्णन है। शब्दों की ध्वनि में हाथी के घण्टे की ध्वनि भी सुनायी पड़ती है। कवि की शब्द-योजना में चित्र साकार हो उठा है—

रनित भृंग घण्टावली झरित दान मधु नीर।
मंद-मंद आवतु चल्यो, कुंजर कुंज समीर॥

इसी प्रकार **'घनन घनन बज उठी गरज तत्क्षण रणभेरी'** में मानो रणभेरी प्रत्यक्ष ही बज उठी है। आदि, मध्य अथवा अन्त में तुकान्त शब्दों के प्रयोग से भी नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है, जैसे—

ढलमल ढलमल चंचल अंचल झलमल झलमल तारा।

इन पंक्तियों में नदी का कल-कल निनाद मुखरित हो उठा है। पदों की आवृत्ति से भी नाद-सौन्दर्य में वृद्धि होती है, जैसे—

माई री वा मुख की मुस्कान सँभारि न जैहै, न जैहै, न जैहै।
अथवा
हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा।
हमकौं लिख्यौ है कहा, कहन सबै लगीं।।

➡ अप्रस्तुत-योजना का सौन्दर्य

कवि विभिन्न दृश्यों, रूपों तथा तथ्यों को मर्मस्पर्शी और हृदयग्राही बनाने के लिए अप्रस्तुतों का सहारा लेता है। अप्रस्तुत-योजना में यह आवश्यक है कि उपमेय हेतु जिस उपमान की, प्रकृत हेतु जिस अप्रकृत की और प्रस्तुत हेतु जिस अप्रस्तुत की योजना की जाय, उसमें सादृश्य अवश्य होना चाहिए। सादृश्य के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसमें जिस वस्तु, व्यापार एवं गुण के सदृश जो वस्तु, व्यापार और गुण लाया जाय, वह उसके भाव के अनुकूल हो। इन अप्रस्तुतों के सहयोग से कवि भाव-सौन्दर्य की अनुभूति को सहज एवं सुलभ बनाता है। कवि कभी रूप-साम्य, कभी धर्म-साम्य और कभी भाव-साम्य के आधार पर दृश्य-बिम्ब उभारकर सौन्दर्य व्यञ्जित करता है।

➡ रूप-साम्य

करतल परस्पर शोक से, उनके स्वयं घर्षित हुए,
तब विस्फुरित होते हुए, भुजदण्ड यों दर्शित हुए,
दो पद्म शुण्डों में लिये, दो शुण्डवाला गज कहीं,
मर्दन करे उनको परस्पर, तो मिले उपमा कहीं।

शुण्ड के समान ही भुजदण्ड भी प्रचण्ड है और करतल अरुण तथा कोमल है। यह प्रभाव आकार-साम्य से ही उत्पन्न हुआ है।

➡ धर्म-साम्य

नवप्रभा परमोज्ज्वल लीक सी गतिमती कुटिला फणिनी समा।
दमकती दुरती घन अंक में विपुल केलि कला खनि दामिनी।।

फणिनी (सर्पिणी) और दामिनी दोनों का धर्म कुटिल गति है, दोनों ही आतंक का प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

➡ भाव-साम्य

प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है?

यशोदा की विकलता को व्यक्त करने के लिए कवि ने कृष्ण को दुःख जलनिधि डूबी का सहारा, प्राण-प्यारा, नेत्र-तारा, हृदय हमारा कहा है।

निम्नलिखित पंक्तियों में सादृश्य से श्रद्धा के सहज सौन्दर्य का चित्रण हुआ है। मेघों के बीच जैसे बिजली तड़पकर चमक पैदा कर देती है, वैसे ही नीले वस्त्रों से घिरी श्रद्धा का सौन्दर्य देखनेवाले के मन को प्रभावित करता है—

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।

इसी प्रकार—

लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ।।

लता-भवन से प्रकट होते हुए दोनों भाइयों की समुचित उत्प्रेक्षा मेघ-पटल से निकलते हुए दो चन्द्रमाओं से की गयी है।

काव्यास्वादन

कविता का आस्वादन उसके अर्थ-ग्रहण में है। अतः पहले शब्दों का मुख्यार्थ समझना आवश्यक है। मुख्यार्थ समझने के लिए अन्वय करना भी आवश्यक है, क्योंकि कविता की वाक्य-संरचना में प्रायः शब्दों का वह क्रम नहीं रहता, जो गद्य में होता है। अतः अन्वय से शब्दों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है और अर्थ खुल जाता है। इस प्रक्रिया में शब्द के वाच्यार्थ के साथ-साथ उसमें निहित लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ भी स्पष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी कवि कविता में ऐसे शब्दों का साभिप्राय प्रयोग करता है, जिनके स्थान पर उनके पर्याय नहीं रखे जा सकते। कभी-कभी एक शब्द के एकाधिक अर्थ होते हैं तथा सभी उस प्रसंग में लागू होते हैं, कभी एक ही शब्द अलग-अलग अर्थों में एकाधिक बार प्रयुक्त होता है, कभी विरोधी शब्दों का प्रयोग भाव-वृद्धि के लिए किया जाता है और कभी एक ही प्रसंग के कई शब्द एक साथ आते हैं। ऐसे शब्दों की ओर ध्यान देकर अपेक्षित अर्थ जानना चाहिए।

कविता के जिन तत्त्वों का उल्लेख किया गया है उनके सन्दर्भ में काव्यास्वादन का प्रयास करना चाहिए। काव्यास्वादन के लिए कविता को बार-बार सस्वर पढ़ना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित बातें सहायक हैं—

1. कविता के मूलभाव को समझकर अपने शब्दों में लिखना।
2. रस, अलङ्कार, गुण और छन्द आदि को समझकर कविता में इनकी उपयोगिता को हृदयंगम करना।
3. अच्छे भाववाले पदों को कण्ठस्थ करना तथा उनका सस्वर पाठ करना।

➡ काव्य के भेद

काव्य दो प्रकार के होते हैं—श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह काव्य है जो कानों से सुना जाता है। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय के माध्यम से देखा-सुना जाता है, जैसे– एकांकी, नाटक।

श्रव्य काव्य के दो भेद हैं—**प्रबन्ध काव्य** और **मुक्तक काव्य**। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा आख्यानक गीतियाँ आती हैं।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद हैं—पाठ्य मुक्तक तथा गेय मुक्तक।

प्रबन्ध काव्य

➡ महाकाव्य

प्राचीन आचार्यों के अनुसार महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास-प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त और महान् चरित्रवाला होता है। इसमें वीर, शृङ्गार तथा शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण होते हैं। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है तथा इसमें कम-से-कम आठ सर्ग होने चाहिए। महाकाव्य की कथा में धारावाहिकता तथा हृदय को भाव-विभोर करनेवाले मार्मिक प्रसंगों का समावेश भी होना चाहिए।

आधुनिक युग में महाकाव्य के प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। इतिहास के स्थान पर मानव-जीवन की कोई भी घटना, कोई भी समस्या, इसका विषय हो सकती है। महान् पुरुष के स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति इसका नायक हो सकता है। परन्तु उस पात्र में विशेष क्षमताओं का होना अनिवार्य है। हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध महाकाव्य हैं—**पद्मावत, रामचरितमानस, साकेत, प्रियप्रवास, कामायनी, उर्वशी, लोकायतन।**

➡ खण्डकाव्य

खण्डकाव्य में नायक के जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष, अंश अथवा रूप का चित्रण होता है। लेकिन खण्डकाव्य महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग नहीं है। खण्डकाव्य में अपनी पूर्णता होती है। समस्त खण्डकाव्य में एक ही छन्द प्रयुक्त होता है।

पंचवटी, जयद्रथ-वध, नहुष, सुदामा-चरित, पथिक, गंगावतरण, हल्दी घाटी आदि हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

➡ आख्यानक गीतियाँ

महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान,

प्रेम और करुणा आदि के प्रेरक घटना-चित्रों से कथा कही जाती है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषताएँ हैं। **झाँसी की रानी, रंग में भंग, विकट भट** आदि रचनाएँ आख्यानक गीतियाँ ही हैं।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न प्रकार का होता है। इसमें एक अनुभूति, एक भाव या कल्पना का चित्रण होता है। इसमें महाकाव्य या खण्डकाव्य-जैसी धारावाहिकता न होने पर भी वर्ण्य-विषय अपने में पूर्ण होता है। प्रत्येक छन्द स्वतन्त्र होता है। जैसे–कबीर, बिहारी, रहीम के दोहे तथा सूर और मीरा के पद।

➡ पाठ्य मुक्तक

इसमें विषय की प्रधानता रहती है। किसी में किसी प्रसंग को लेकर भावानुभूति का चित्रण होता है और किसी में किसी विचार अथवा रीति का वर्णन किया जाता है। कबीर, तुलसी, रहीम के भक्ति एवं नीति के दोहे तथा बिहारी, मतिराम, देव आदि की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं।

➡ गेय मुक्तक

इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। यह अंग्रेजी के लिरिक का समानार्थी है। इसमें भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौन्दर्यमयी कल्पना, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है।

हिन्दी पद्य-साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का आविर्भाव सर्वप्रथम पद्य से हुआ था। विद्वानों ने हिन्दी पद्य के इतिहास को युग की विशेष प्रवृत्तियों के आधार पर चार कालों में विभाजित किया है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)	800 विक्रमी सं० से 1400 वि० सं० तक (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)
2. पूर्व-मध्य काल (भक्तिकाल)	1400 वि० सं० से 1700 वि० सं० तक (सन् 1343 ई० से 1643 ई० तक)
3. उत्तर-मध्य काल (रीतिकाल)	1700 वि० सं० से 1900 वि० सं० तक (सन् 1643 ई० से 1843 ई० तक)
4. आधुनिक काल	1900 वि० सं० से अब तक (सन् 1843 ई० से आज तक)

हिन्दी पद्य साहित्य के विभिन्न कालों से सम्बन्धित शाखाएँ

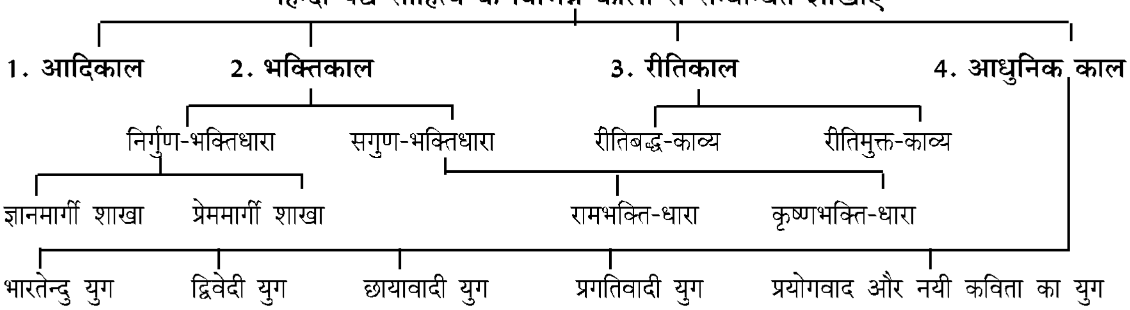

➨ आदिकाल (सन् 743 ई0 से 1343 ई0 तक)

हिन्दी के प्रथम उत्थान काल को वीरगाथा काल, चारण काल आदि नाम दिये गये हैं। उस समय देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इन राज्यों के राजपूत राजा आपस में लड़ते थे। स्वभाव से वे वीर, साहसी एवं विलासप्रिय थे। छोटी-छोटी बातों पर मन-मुटाव, ईर्ष्या तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के कारण प्रायः इनमें लड़ाइयाँ होती रहती थीं। मुसलमानों के आक्रमण इसी समय आरम्भ हो गये थे। इस समय वीर पुरुषों के यशोगान तथा वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ही कविता का मुख्य विषय था। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा।
2. सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों के सुन्दर और सजीव वर्णन।
4. वीर रस के साथ शृङ्गार का भी वर्णन।
5. ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना का प्राचुर्य।

इस काल की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं—

1. प्रबन्ध काव्य के रूप में। 2. वीर गीतों के रूप में।

वीर गीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य 'आल्हा खण्ड' है। जगनिक नामक भाट कवि द्वारा रचित इस काव्य में महोबे के दो प्रसिद्ध वीरों—आल्हा तथा ऊदल (उदय सिंह) के वीर चरितों का विस्तृत वर्णन है। यह बहुत ही लोकप्रिय है तथा इसके गीत आज भी वर्षा ऋतु में उत्तर भारत के प्रत्येक गाँव में ढोलक की थाप के साथ गाये जाते हैं।

इस काल में कुछ शृङ्गार रस की तथा भक्ति की रचनाएँ भी हुईं। किन्तु प्रमुखता वीर रस के काव्यों की ही रही। विद्यापति तथा अब्दुलरहमान इस युग के अन्य प्रसिद्ध रचनाकार हैं। वीरगाथाकालीन ग्रन्थों में विविध छन्दों का प्रयोग मिलता है। दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, रोला, छप्पय, कुण्डलिया आदि छन्दों का कलात्मक प्रयोग हुआ है।

➨ भक्तिकाल (सन् 1343 ई0 से 1643 ई0 तक)

आदिकाल के समाप्त होते-होते देश में राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गयीं। मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर परस्पर लड़ते रहनेवाले छोटे-छोटे राजा भी अब न रहे। इसी परिवर्तित परिस्थिति में भक्ति-भावना का उदय हुआ। 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस भक्ति-भावना ने हिन्दी काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया। इसी काल में भक्ति की कई शाखाओं का विकास हुआ। अध्ययन-सुविधा हेतु इस काल के काव्य को दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है—निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। प्रथम की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा द्वितीय की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं।

निर्गुण भक्ति शाखा—इसमें ब्रह्म (ईश्वर) के निराकार स्वरूप की उपासना की विधि अपनायी गयी। इसकी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में सन्त रैदास (रविदास), नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास तथा सुन्दरदास हैं। इन भक्तों ने साधना के सहज मार्ग को अपनाया; साथ ही जाति-पाँति, तीर्थ-व्रत आदि बाह्याडम्बरों का विरोध किया। इनकी रचनाओं में साहित्यिक सौन्दर्य चाहे अधिक न हो, किन्तु भाव की दृष्टि से वे अत्यन्त समृद्ध तथा प्रभावोत्पादक हैं। इनकी भाषा पंचमेल सधुक्कड़ी है।

निर्गुण शाखा की दूसरी उपशाखा प्रेमाश्रयी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे पल्लवित करने का श्रेय सूफी मुसलमान कवियों को है। इन कवियों ने लोक-प्रचलित हिन्दू राजकुमारों तथा राजकुमारियों की प्रेम-गाथाओं को फारसी की मसनवी शैली के माध्यम से अति आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी कविताएँ दोहा और चौपाई छन्दों में हैं। प्रेम की पीर, विरह-वेदना की तीव्रता, कथा की रोचकता और कल्पना तथा इतिहास का समन्वय इन सूफी कवियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं, जिनका पद्मावत (आख्यान काव्य) हिन्दी साहित्य का एक अनमोल ग्रन्थ-रत्न है। इसकी कहानी में इतिहास तथा कल्पना का योग है। चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती तथा राजा रत्नसेन की कहानी इसमें प्रस्तुत की गयी है। इसमें लौकिक आख्यान द्वारा पारलौकिक प्रेम की व्यञ्जना है। जायसी कृत पद्मावत की भाषा अवधी है। **आचार्य शुक्ल** के शब्दों में 'अवधी की खालिस, बेमेल मिठास' के लिए पद्मावत बराबर याद किया जायगा।

कुतबन कृत **'मृगावती'**, मंझन कृत **'मधुमालती'**, उस्मान कृत **'चित्रावली'**, शेखनबी कृत **'ज्ञानदीप'**, कासिमशाह कृत **'हंस-जवाहिर'** तथा नूर मुहम्मद कृत **'इन्द्रावती'** अन्य प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य हैं।

सगुण भक्ति-शाखा—11वीं शताब्दी में स्वामी रामानुजाचार्य भक्ति के क्षेत्र में अवतार-भावना को प्रतिष्ठित कर चुके थे। उन्हीं की शिष्य-परम्परा में 15वीं शताब्दी में स्वामी रामानन्द जी हुए, जिन्होंने जनता की चित्तवृत्तियों को समझने का सत्प्रयास किया तथा जनता के बीच राम-भक्ति का प्रचार किया। रामानन्द जी की शिष्य-परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास जी हुए, जिन्होंने दशरथ-पुत्र, मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम का शक्ति-शील-सौन्दर्य रूप 'रामचरितमानस' महाकाव्य में प्रस्तुत किया। राम-भक्ति की यह पावन मन्दाकिनी न जाने कितनों के मन का कल्मष बहा ले गयी। तुलसीदास जी द्वारा स्थापित लोक-आदर्श और राम-राज की महान् कल्पना भारतीय समाज को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक बड़ी देन है।

यह महाकाव्य अवधी भाषा में लिखा गया है तथा इसमें जायसी द्वारा अपनायी गयी दोहा-चौपाई शैली का परिष्कृत साहित्यिक रूप मिलता है। रामचरितमानस की कथा का मूलस्रोत वाल्मीकि 'रामायण' है। इस महाकाव्य में जीवन की सर्वाङ्गीणता है। रचना-कौशल, प्रबन्ध-पटुता, भाव-प्रवणता, रस, रीति, अलङ्कार, छन्द आदि सभी दृष्टियों से यह उत्कृष्ट काव्य-कृति कही जा सकती है। तुलसीदास की रचना का उद्देश्य लोकमङ्गल की साधना है। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र के लोक-संग्रही चरित्र को काव्य का विषय बनाकर भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य को शक्ति प्रदान की है।

सगुणोपासना की दूसरी शाखा कृष्णाश्रयी शाखा कहलाती है। इसके अन्तर्गत श्रीकृष्ण की पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा हुई। कृष्ण भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय श्री वल्लभाचार्य को है। वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि में रहे और उन्होंने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी का एक बड़ा मन्दिर बनवाया। कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वोत्कृष्ट कवि सूरदास हैं, जिन्होंने कृष्ण-लीला के मधुर पद गाकर प्रेम और संगीत की ऐसी मन्दाकिनी बहायी, जिसमें डुबकी लगाकर जनता का हृदय आनन्दमग्न हो गया। सूरदास कृत 'सूर-सागर' हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। 'साहित्य-लहरी' और 'सूर-सारावली' भी उन्हीं की रचनाएँ मानी जाती हैं। सूर-सागर के अन्तर्गत सवा लाख पद रचने की बात कही गयी है, पर लगभग दस हजार पद ही मिलते हैं। इसमें विनय, बाल-लीला, गोचारण, गोपी-प्रेम, भ्रमर-गीत आदि से सम्बन्धित बड़े ही सूक्ष्म भाव-चित्र पाये जाते हैं। कृष्ण-भक्त कवियों में **सूरदास** के अतिरिक्त **नन्ददास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी तथा गोविन्दस्वामी हैं।** आठ कवियों के इस समुदाय को **अष्टछाप** कहते हैं। अन्य कृष्णभक्त कवियों में मीराबाई और रसखान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

➡ रीतिकाल (सन् 1643 ई0 से 1843 ई0 तक)

काव्यशास्त्र में रीति का तात्पर्य काव्यशास्त्र के विभिन्न अंगों–रस, ध्वनि, अलङ्कार, गुण-दोष, नायिका-भेद कथन के विवेचन से है। जिस ग्रन्थ में काव्य के इन अंगों-उपांगों का निरूपण किया जाता है, उसे रीति ग्रन्थ कहते हैं। 16वीं-17वीं शताब्दी तक इस देश में मुगल साम्राज्य पूर्णतः प्रतिष्ठित होकर वैभव के शिखर पर था। जन-जीवन भी सुख-शान्तिपूर्ण था। साहित्य पर इस परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। पहले कृष्ण तथा राधा भक्ति के आलम्बन थे, वे अब शृङ्गार के आलम्बन बन गये। इसके अतिरिक्त एक अन्य परिवर्तन भी आया। कवियों का ध्यान साहित्य-शास्त्र की ओर गया और उन्होंने रस, अलङ्कार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण रूप में काव्य-रचना की। इस प्रकार की रचनाओं को रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहा जाता है। इस काल में ऐसी रीतिपरक रचनाएँ अधिक हुईं और इसी कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है।

रीति ग्रन्थ दो रूपों में मिलते हैं। एक वे जो अलङ्कार पर आधृत हैं और दूसरे वे जो रस पर। यहाँ संस्कृत की ही परम्परा का पालन दिखायी पड़ता है। केशव, भूषण और राजा यशवन्त सिंह अलङ्कारवादी आचार्य कवि थे। मतिराम, देव और पद्माकर रसवादी थे। रसवादी कवियों ने शृङ्गार रस के अन्तर्गत नायक-नायिकाओं की मनोदशाओं का विशद् वर्णन किया है। कुछ ऐसे भी उत्कृष्ट कवि हुए हैं जिनकी रचनाएँ रीतिबद्ध नहीं हैं। बिहारी और घनानन्द का नाम इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। शृङ्गार के अतिरिक्त इस काल में कुछ भक्ति, नीति तथा वीर काव्य भी रचे गये। भूषण, गोरेलाल और सूदन वीर रस के कवि थे। वृन्द, गिरधर और दीनदयाल गिरि नीतिपरक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

केशव	:	रामचन्द्रिका, कविप्रिया;
भूषण	:	शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दशक;
मतिराम	:	रसराज, ललित-ललाम;
बिहारी	:	सतसई;
पद्माकर	:	पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगा लहरी।

रीतिकाल के कवि प्रायःराजाश्रय में रहते थे। इसलिए इनकी रचनाओं में अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ भी मिलती हैं।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ—रीतिग्रन्थों का निर्माण, शृंगार रस की प्रमुखता, काव्य-भाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा और व्यापक प्रसार; सवैया और दोहा छन्दों का प्रचुर प्रयोग; प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण; आश्रयदाताओं की प्रशंसा, कला-पक्ष की प्रधानता आदि इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

रीतिकाल की देन—इस युग की प्रमुख देन यह है कि ब्रजभाषा, काव्य भाषा के रूप में व्यापक रूप से प्रतिष्ठित हुई। अर्थ-गौरव, चमत्कार, लाक्षणिकता, सूक्ष्म भावाभिव्यञ्जन आदि की दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ भाषा बन गयी। घनानन्द की लाक्षणिकता तो अद्वितीय है। कविता, सवैया और दोहा मुक्तक काव्य-रचना के लिए सिद्ध छन्द बन गये।

➨ आधुनिक काल (सन् 1843 ई0 से आज तक)

आधुनिक युग में देश में राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रारम्भ होने से लोगों के आत्म-गौरव का प्रभाव हिन्दी कविता पर पड़ना स्वाभाविक था। अतः देश-हित, समाज-सुधार, धर्म-सुधार आदि नवीन विषयों पर कविताएँ लिखी जाने लगीं। पद्य में नवीन वादों और नवीन शैलियों का प्रचलन हुआ और उन नवीन शैलियों में कविता रची जाने लगी। आधुनिक काल, गद्य काल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि इस काल के कुछ प्रमुख नाम हैं।

हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावादी धारा तथा नयी कविता के युगों में क्रमशः विभाजित किया गया है—

➨ भारतेन्दु-युग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। रीतिकाल में कवियों का नाता जन-जीवन से टूट चुका था। भारतेन्दु-युग के कवियों ने इस सम्पर्क को फिर स्थापित किया और जन-भावना को वाणी दी। इस युग में खड़ीबोली गद्य की भाषा तो बन चुकी थी, किन्तु काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा की ही प्रधानता रही। काव्य-विषय की दृष्टि से भी नवीनता आयी। गद्य के क्षेत्र में जहाँ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और आलोचना आदि का विकास हुआ, वहाँ काव्य के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति-प्रेम, स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति-चित्रण आदि विषयों का समावेश हुआ।

➨ द्विवेदी-युग

—द्विवेदी जी के अवतरित होते ही खड़ीबोली का आन्दोलन बड़े जोरों से चला। द्विवेदी जी से प्रेरणा पाकर अनेक तरुण कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना आरम्भ की। श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय आदि कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' तथा हरिऔध ने 'प्रिय प्रवास' नामक महाकाव्य की रचना इसी युग में की। गुप्त जी ने अनेक खण्डकाव्यों की भी रचना की। इस युग की कविता इतिवृत्तात्मकता एवं वर्णन-प्रधान थी। खड़ीबोली को समृद्ध और गतिशील बनाने का बहुत-कुछ श्रेय आचार्य द्विवेदी को ही जाता है और इसी कारण इस युग का नाम द्विवेदी-युग पड़ा।

➨ छायावादी युग

द्विवेदी-युग के बाद छायावाद युग का आगमन हुआ। ऐसा लगता है मानो विदेशी शासन के अत्याचारों, नैतिकता की कठोरता से जकड़े हुए नियमों तथा आर्थिक कष्टों से उत्पन्न कवियों का विक्षोभ और असन्तोष वर्तमान से दूर किसी काल्पनिक संसार में जाने के लिए मचल उठा। वास्तव में छायावादी काव्य द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया थी। **प्रसाद, पन्त, निराला** और **महादेवी** छायावाद के प्रमुख स्तम्भ कवि हैं।

वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता (आत्मपरक रचनाएँ), सौन्दर्य-भावना, शृङ्गार और प्रेम, वेदना, करुणा तथा नैराश्य की भावना, प्रकृति का मानवीकरण, रहस्य भावना इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। छायावादी काव्य में अनुभूति एवं भावुकता के साथ चिन्तन की भी प्रधानता है। जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर भी इस युग के कवियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। मानवतावाद तथा देश-प्रेम की भावना भी इस काल के काव्य में मिलती है।

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत गेय तथा संगीतात्मक हैं। निराला और महादेवी के काव्यों में गीति का सुन्दर विधान है। रामकुमार वर्मा के गीत भी लोकप्रिय हुए हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैलियों को अपनाकर छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया। प्रभावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया। अलङ्कारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय-जैसे नये अलङ्कारों का

उदय एवं प्रचुर प्रयोग हुआ। भाषा (खड़ीबोली) को सँवारने, उसमें ब्रजभाषा-जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यञ्जना शक्ति बढ़ाने का समस्त श्रेय इस युग को ही दिया गया है।

➡ प्रगतिवादी युग

द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मकता, आदर्शवादिता और नैतिकता के विरुद्ध विद्रोह छायावादी काव्य में हुआ था, किन्तु छायावादी काव्य में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं की इतनी अतिशयता हो गयी कि स्थूल जगत् की कठोर वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध ही न रह गया था।

परिणामतः प्रगतिवादी कविता में छायावादी कविता की सूक्ष्मता और अतिकाल्पनिकता के प्रति विद्रोह हुआ। प्रगतिवादी कवि स्थूल जगत् की वास्तविकता की ओर लौटा। कार्ल मार्क्स के साम्यवाद को आधार बनाकर रोटी-कपड़ा-मकान की समस्या और मजदूरों-किसानों की दयनीय दशा को कविता का विषय बनाया गया। इन कवियों ने पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज उठायी। सीधी-सादी अनलंकृत भाषा में अपनी बात कह देना (सपाटबयानी) इनकी विशेषता है। प्रगतिवादी कवियों में **पन्त, निराला, दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन** और **केदारनाथ अग्रवाल** आदि मुख्य हैं। इनमें से कुछ कवियों की कविताओं में सामाजिक क्रान्ति का स्वर अधिक प्रखर है। प्रगतिवादी कवियों ने छन्द के बन्धन की अनिवार्यता को नहीं माना।

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

भारतेन्दु-युग	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र श्रीधर पाठक	प्रेम-माधुरी कश्मीर-सुषमा
द्विवेदी-युग	मैथिलीशरण गुप्त अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	साकेत प्रियप्रवास
छायावादी युग	जयशंकर 'प्रसाद' महादेवी वर्मा	कामायनी यामा
प्रगतिवादी युग	शिवमंगल सिंह 'सुमन' रामधारीसिंह 'दिनकर'	प्रलय सृजन उर्वशी
प्रयोगवादी युग	'अज्ञेय' नागार्जुन	आँगन के पार द्वार प्यासी-पथरायी आँखें
नयी कविता युग	गिरिजाकुमार माथुर भवानीप्रसाद मिश्र	धूप के धान खुशबू के शिलालेख

प्राचीन रूढ़ियों और मान्यताओं का विरोध, मानवतावादी प्रवृत्ति, शोषक वर्ग के प्रति घृणा तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति, विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, समाज का यथार्थवादी चित्रण, नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि इस प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

प्रयोगवादी धारा एवं नयी कविता युग

प्रयोगवाद का आरम्भ, अज्ञेय द्वारा सम्पादित तथा सन् 1943 ई0 में प्रकाशित 'तारसप्तक' संकलन से माना जाता है। **प्रथम 'तारसप्तक'** में सात कवियों की रचनाएँ हैं। इन्हें सम्पादक अज्ञेय ने 'राहों का अन्वेषी' कहा था। ये सात कवि थे—अज्ञेय, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचन्द्र, भारतभूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर तथा रामविलास शर्मा। सन् 1951 ई0 में **दूसरा सप्तक** प्रकाशित हुआ, जिसके सात कवि थे—भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती। सन् 1959 ई0 में **तीसरा सप्तक** भी प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद

के समर्थन में कुछ पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलीं। कुछ प्रयोगवादी कवियों के कविता-संग्रह भी प्रकाशित हुए। अज्ञेय रचित 'हरी घास पर क्षण भर', 'सुनहरे शैवाल', 'इन्द्र धनु रौंदे हुए थे', 'आँगन के पार द्वार', भवानीप्रसाद मिश्र कृत 'गीत फरोश', 'खुशबू के शिलालेख', गिरिजाकुमार माथुर कृत 'धूप के धान', 'शिलापंख चमकीले', धर्मवीर भारती कृत 'ठण्डा लोहा', 'कनुप्रिया' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

घोर वैयक्तिकता, अतियथार्थवादी दृष्टिकोण, कुण्ठा और निराशा के स्वर, गहन बौद्धिकता, भदेस (अनगढ़, विरूप) का चित्रण, विद्रोह का स्वर, व्यंग्य तथा कटूक्ति प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इन कवियों ने नये प्रयोग किये हैं। साहित्यिक हिन्दी के साथ अंग्रेजी, उर्दू, बँगला तथा अन्य आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। यह कविता मुक्तक शैली में रची गयी है। नवीन बिम्ब-योजना तथा नवीन उपमानों का प्रयोग (लालटेन से नयन-दीप, हड्डी के रंगवाला बादल, मजदूरिनी-सी रात आदि) भी इसकी विशेषता है। प्रयोगवादी कविता ने हिन्दी काव्य को नयी सशक्त भाषा दी है तथा इसकी अभिव्यञ्जना शक्ति में वृद्धि की है।

प्रयोगवादी धारा विकसित होकर नयी कविता के रूप में आयी। सन् 1960 ई० के बाद नयी कविता का युग आया। इन वर्षों में ऐसी वाद-मुक्त कविता रची गयी है जो किसी विशेष प्रवृत्ति 'स्कूल' या 'वाद' से बँधकर नहीं चली। इसमें 'लघुमानव' के महत्त्व की प्रतिष्ठा की गयी। इस प्रवृत्ति से यह आशय हुआ कि व्यक्ति की सामान्य मनःस्थितियों को अभिव्यक्त करनेवाली कुछ ऐसी कविताएँ लिखी गयीं जो सचमुच नयी थीं। वे मध्यवर्गीय व्यक्ति के मन की जटिलाओं को अधिक अपनेपन से प्रकट करती हैं—यद्यपि उन्हें समझने का उतना प्रयास नहीं करतीं।

नयी कविता के अनन्तर अकविता का दौर आया, उसमें अस्वीकृति के तेवर चरम सीमा पर पहुँच गये। अकविता का आशय ऐसी काव्य-प्रवृत्ति से था, जैसी कविता अब तक नहीं हुई है। इसमें उसके नाम की ही परम्परा का पूर्णरूपेण नकारने का भाव रहा है। इस प्रवृत्ति का निराकरण अथवा निवारण मुक्तिबोध तथा धूमिल आदि की कविताओं के प्रकाशन-प्रचारोपरान्त हुआ।

●●

हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न

1. रीतिकाल की किन्हीं चार प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। **(2017AC,AB,AD,AG,19AC,AE,20MB)**

अथवा रीतिकाल की दो विशेषताएँ लिखिए। **(2020MG,ME)**

2. सगुण भक्ति-शाखा के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम लिखिए तथा उनकी एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।

3. हिन्दी पद्य-साहित्य के आधुनिक काल की चार शाखाओं के नाम लिखिए।

4. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–

(i) साहित्य लहरी (ii) लोकायतन

(iii) रश्मि (iv) त्रिधारा

(v) जमीन पक रही है।

5. साकेत, गीतावली, स्वप्न, ग्रन्थि में से दो के रचनाकारों के नाम लिखिए।

6. कबीर और जायसी की एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।

7. मैथिलीशरण गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय की एक-एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए।

8. हिन्दी खड़ीबोली में काव्य-रचना करनेवाले किन्हीं दो प्रमुख कवियों का नाम बताइए तथा उनकी रचना का भी उल्लेख कीजिए।

9. प्रगतिवादी कविता की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AG,19AC,AE,20MA)**

अथवा 'प्रगतिवादी युग' की दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। **(2016CB,17AD,20MG,MF)**

10. हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कीजिए।

11. आदिकाल की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

12. प्रगतिवादी कविता की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए दो प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

13. रीतिकाल की दो प्रमुख रचनाओं तथा इस काल के दो रचनाकारों के नाम लिखिए।

14. छायावाद की विशेषताओं (प्रवृत्तियों) पर प्रकाश डालिए तथा दो प्रमुख छायावादी कवियों का नामोल्लख कीजिए।

15. आधुनिक काल की प्रयोगवादी धारा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

16. दूसरे तारसप्तक के कवियों के नाम लिखिए।

17. आधुनिक काल के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

18. प्रयोगवादी कविता की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। **(2020MB)**

19. प्रथम तारसप्तक के कवियों के नाम लिखिए।

20. हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के नामकरण पर विचार कीजिए।

21. रीतिकाल में वीर रस की कविता किस कवि ने लिखी?

22. रीतिकाल की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए तथा दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2020MA)**

23. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद में से किसी एक की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

24. महादेवी वर्मा के किसी एक रेखाचित्र विधा की रचना का नाम लिखिए।

25. रीतिकाल को श्रृंगार काल किसने कहा?

26. रीतिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2016CA,20MA)**

27. रीतिकाल को अन्य किन नामों से जाना जाता?

28. 'अनामिका' तथा 'धूप के धान' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

29. धर्मवीर भारती की किसी एक काव्य-कृति का नाम लिखिए।

30. जयशंकर प्रसाद के दो प्रमुख काव्य ग्रन्थों के नाम लिखिए।

31. छायावादी युग के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2017AC,AG)**

अथवा किसी एक छायावादी कवि का नाम लिखिए।

32. द्विवेदी युग के किन्हीं दो प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कीजिए। **(2019AG)**

33. 'लोकायतन' के रचयिता का नाम लिखिए।

34. रामनरेश त्रिपाठी की किसी एक काव्यकृति का नाम लिखिए।

35. छायावाद की किन्हीं दो रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके रचनाकारों का नाम लिखिए। **(2016CC)**

36. 'रामचन्द्रिका' तथा 'ललितललाम' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

37. भारतेन्दु-युग के दो प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

38. भक्तिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

39. आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) का उल्लेख कीजिए।

40. 'भारत भारती' के रचनाकार कौन हैं?

41. छायावाद के चार स्तम्भ कवि किन्हें माना जाता है?

42. रीतिकाल के दरबारी कवियों का मुख्य लक्ष्य क्या था?

43. रीतिकाल का समय-निर्धारण कीजिए।

44. आधुनिक काल कब से कब तक माना जाता है?

45. रीतिकाल की मुख्य धाराओं के नाम लिखिए।

46. भारतेन्दु-युग की समय-सीमा बताइए।

47. द्विवेदी-युग की समय-सीमा बताइए।

48. प्रगतिवादी युग के किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए। उनकी एक-एक रचना का भी उल्लेख कीजिए।

49. द्विवेदी-युग के किन्हीं दो प्रमुख कवियों के नाम बताइए।

50. हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना के दर्शन किसकी रचनाओं में होते हैं?

51. 'तारसप्तक' का प्रकाशन कब हुआ था? उसके किन्हीं दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

52. दूसरे 'तारसप्तक' के सम्पादक का नाम लिखकर उसके प्रकाशन-वर्ष का उल्लेख कीजिए।

53. 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन कब हुआ?

54. हिन्दी के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।

55. नयी कविता के चार कवियों के नाम लिखिए। **(2017AE)**

56. नयी कविता के दो प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

57. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधारा के दो-दो कवियों के नाम लिखिए।

अथवा रीतिबद्ध कवियों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।

58. निम्नलिखित रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए—

(i) रसिकप्रिया (ii) छत्रसाल दशक

(iii) मधुकलश (iv) साकेत।

59. पृथ्वीराज रासो, प्रियप्रवास, पल्लव एवं कामायनी में से दो रचनाओं के रचनाकारों का नामोल्लेख कीजिए।

60. 'कविता-कौमुदी' किसके द्वारा सम्पादित कृति है?

61. हिम तरंगिणी, भस्मांकुर, यामा, निशा-निमन्त्रण काव्य-कृतियों में से किन्हीं दो के कवियों के नाम लिखिए।

62. जयशंकर प्रसाद एवं महादेवी वर्मा किस युग से सम्बन्धित हैं?

63. रीतिमुक्त किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए। **(2020MF)**

64. भक्तिकाल के किसी एक कवि का नाम लिखिए। **(2017AB)**

65. निम्नलिखित में से किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए–
(i) साकेत (ii) गीतावली (iii) लोकायतन (iv) युगधारा

66. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों एवं उनकी एक-एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

67. भक्तिकाल की दो प्रमुख धाराओं का नाम लिखिए तथा उनके एक-एक प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

68. माखनलाल चतुर्वेदी की किसी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

69. रीतिमुक्त धारा के दो कवियों के नाम लिखिए।

70. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के रचनाकार का नाम लीखिए–
(i) कविप्रिया (ii) पंचवटी (iii) उत्तरायण (iv) रेणुका

71. नयी कविता के किसी एक कवि का नामोल्लेख कीजिए।

72. द्विवेदी युग की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

73. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' किस युग के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

74. 'कर्णफूल' तथा 'रसवन्ती' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

75. प्रयोगवादी धारा के प्रमुख दो कवियों के नाम लिखिए। **(2017AA)**

76. केशवदास किस काल के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

77. 'साकेत' तथा 'उर्वशी' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

78. 'भारत-भारती' किसकी रचना है?

79. 'मुकुल' और 'युगान्त' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

80. महादेवी वर्मा की किसी एक काव्यकृति का नामोल्लेख कीजिए।

81. छायावादी युग की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। **(2017AA,AB,19AB,20MC,MD,MB)**

अथवा छायावाद की दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

82. प्रयोगवादी काव्यधारा के दो कवियों की एक-एक रचना का नामोल्लेख कीजिए। **(2020MC,MD,MF)**

83. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–
(i) शृंगार मंजरी (ii) प्रिय-प्रवास (iii) रसवन्ती।

84. 'हारे को हरिनाम' और 'लोकायतन' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

85. रीतिबद्ध शाखा के किसी एक कवि का नाम लिखिए तथा उसकी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

86. प्रगतिवाद से सम्बन्धित किसी एक प्रसिद्ध कवि और उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

87. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

88. 'गीत फरोश' किस कवि की रचना है?

89. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–
(i) जगद् विनोद (ii) रसिकप्रिया (iii) शिवा बावनी

90. 'प्रिय प्रवास' और 'मधुशाला' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

91. 'परशुराम की प्रतीक्षा' तथा 'हुंकार' के रचयिता के नाम लिखिए।

92. सुभद्रा कुमारी चौहान के दो प्रसिद्ध काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।

93. 'भारत-भारती' तथा 'पथिक' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

94. प्रयोगवादी काव्यधारा की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

95. छायावादी युग के किन्हीं दो कवियों के नाम और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

96. प्रगतिवादी युग की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए। **(2020MD)**

अथवा प्रगतिवादी काव्य की किसी एक प्रवृत्ति का उल्लेख कीजिए।

97. 'आँगन के पार द्वार' के रचनाकार का नाम लिखिए।

98. 'नीरजा' तथा 'आकाश गंगा' के रचयिता के नाम लिखिए।

99. त्रिलोचन के दो प्रसिद्ध काव्यों के नाम लिखिए।

100. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–
(i) पथिक (ii) उर्वशी (iii) कामायनी (iv) युगधारा

101. 'रसिकप्रिया' तथा 'दीपशिखा' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

102. 'उत्तरायण' कृति के रचनाकार का नामोल्लेख कीजिए।

103. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए–
(i) वैराग्य संदीपनी (ii) प्रेम वाटिका (iii) ग्राम्य गीत (iv) मुकुल

104. किसी एक प्रगतिवादी कवि का नाम लिखिए।

105. 'छायावादी युग' के किसी एक कवि या एक कवयित्री का नाम लिखिए। **(2020ME)**

106. घनानन्द किस युग के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

107. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के रचनाकार का नाम लिखिए–
(i) चिदम्बरा (ii) पलाशवन (iii) हिमतरंगिणी (iv) झरना

108. निम्नलिखित में से किसी एक काव्य-ग्रन्थ के कवि का नाम बताइए–
(i) एक पतंग अनन्त में (ii) पंचवटी (iii) समर्पण (iv) अनामिका

109. निम्नलिखित रचनाओं में से किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकार के नाम लिखिए–
(i) पलाशवन (ii) पल्लव (iii) पंचवटी (iv) परशुराम की प्रतीक्षा

110. घनानन्द किस युग के कवि हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AE)**

111. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक के रचनाकार का नाम लिखिए– **(2020MC)**
(i) पिघलते पत्थर (ii) पद्माभरण (iii) प्रियप्रवास (iv) द्वापर

112. 'गीतावली' के कवि का नाम लिखिए। **(2020MG)**

113. निम्नलिखित रचनाओं में किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए– **(2020ME)**
(i) हिम किरीटिनी (ii) चिदम्बरा (iii) पथिक (iv) यशोधरा

114. 'तीसरा सप्तक' काव्य संग्रह का प्रकाशन किस वर्ष हुआ? **(2020MA)**

|| अध्ययन-अध्यापन ||

कविता का मुख्य उद्देश्य काव्य-सौन्दर्य की रसानुभूति द्वारा आनन्द प्रदान करना है। कविता का अध्ययन-अध्यापन इस प्रकार होना चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। जिस प्रकार मातृभाषा के गद्य साहित्य का सम्बन्ध मानसिक विकास से है, उसी प्रकार उसके काव्य साहित्य का सम्बन्ध छात्रों के भावात्मक विकास से है। काव्य मनुष्य को सुख-दुःख से ऊपर उठाकर, आनन्द की स्थिति तक पहुँचाता है। उसके अध्ययन से हृदय का कलुष धुल जाता है, कुत्सित भाव नष्ट हो जाते हैं और कल्याणकारी भाव पुष्ट होते हैं।

कविता के पठन-पाठन से परोक्ष रूप में छात्रों का भाषा-ज्ञान भी बढ़ता है। परन्तु कविता-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य भाषा सीखना नहीं है। उसका लक्ष्य आनन्द की अनुभूति कराना है। शिक्षक और छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करें। शब्दार्थ, व्याख्या, घटना-व्यापार, वैज्ञानिक सत्य, पशु-पक्षी-स्वभाव तथा कथा-कहानी से सम्बन्धित ज्ञान से आगे बढ़ने पर ही वास्तविक कविता-शिक्षण का कार्य आरम्भ होता है। शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से काव्य-सौन्दर्य को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य और विचार-सौन्दर्य। अभिव्यक्ति के अन्तर्गत नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य है। अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि के सहारे वस्तु-व्यापारों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। लज्जा, शोक, नीति सम्बन्धी रचनाओं में विचारों की प्रमुखता रहती है। सूर के बाल-लीला के पद भाव-प्रधान रचनाओं के उदाहरण हैं।

रसास्वादन की शिक्षा देना कठिन कार्य है। यदि शिक्षक का मन किसी कविता में नहीं रम सका, तो वह छात्रों में उस कविता के प्रति राग उत्पन्न करने में कभी सफल नहीं होगा। परन्तु जिस शिक्षक को काव्य से प्रेम है उसके लिए काव्य-शिक्षण का कोई सिद्ध सूत्र निर्धारित करना कठिन होगा। कुछ सामान्य सिद्धान्तों की ओर यहाँ संकेत दिया जा रहा है—

(1) रसास्वादन की क्षमता प्रत्येक बालक में अलग-अलग मात्रा में होती है। अतः प्रत्येक छात्र से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा न करनी चाहिए।

(2) उचित शिक्षण और अभ्यास से यह क्षमता बढ़ायी जा सकती है।

(3) कविता का सुपाठ कठिन कार्य है। अतः छात्रों द्वारा कविता-पाठ कराते समय विवेक से काम लेना चाहिए।

(4) कविता का प्रथम परिचय प्रभावोत्पादक हो। शिक्षक के सुपाठ से भी मार्ग बहुत-कुछ प्रशस्त हो जाता है। सुपाठ में व्यञ्जनों तथा स्वर वर्णों का उच्चारण पूर्ण स्पष्ट तथा शुद्ध हो। ब्रज और अवधी की रचना में भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप ही उच्चारण हो। संगीत-तत्त्व को उभर आना चाहिए। शिक्षक की वाणी तथा भावभंगी रसानुकूल हो—जैसे वीर रस में उत्साह, राष्ट्र-प्रेम में ओज और शान्त रस की रचना के पाठ में गाम्भीर्य अपेक्षित है। वाणी से छन्द की गति और अर्थ की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए।

(5) कविता का सौन्दर्य उसके अर्थ में निहित रहता है और शब्द उस अर्थ को व्यक्त करते हैं। शब्दों के अर्थ, प्रसंगानुकूल अर्थ, वाक्य के शब्द-क्रम आदि से परिचित होना रसास्वादन का प्रथम सोपान है। अतः शिक्षक को कविता की पृष्ठभूमि तथा शब्दार्थ आदि से अपने छात्रों को परिचित कराना चाहिए। आवश्यकतानुसार पदान्वय भी करा देना चाहिए, क्योंकि बाहर से अर्थ का आरोपण करना उचित नहीं होगा। तदुपरान्त व्याख्या, प्रश्न, तुलना आदि से विचारों, भावों और कल्पनाओं को व्यवस्थित करना वांछनीय है। जहाँ कहीं रिक्तियाँ होंगी, उनकी पूर्ति भी शिक्षक को ही करनी होगी। कविता के शब्दों से लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना है, छात्र को इसकी प्रतीति निरन्तर कराते रहना चाहिए।

(6) कक्षा का वातावरण आनन्दमय हो। बातचीत के ढंग में अकृत्रिमता और साहचर्य का भाव हो, जिससे छात्र सहभागिता का अनुभव करें।

(7) सुपाठ, व्याख्या, प्रश्नोत्तर आदि द्वारा छात्रों से रसानुभूति की अभिव्यक्ति करायी जाय। कण्ठाग्र करने और सुपाठ करने से कविता के पठन-पाठन के लिए अनुकूल संस्कार बनते हैं।

पाठ-संचालन के निम्न सोपान प्रस्तावित किये जा सकते हैं—

(1) शिक्षक द्वारा सुपाठ।

(2) केन्द्रीय भाव-ग्रहण।

(3) शब्दार्थ एवं सूक्ष्म भाव तथा विचार-विश्लेषण। यह कार्य जितना सहयुक्त एवं सम्बद्ध रूप से चल सके, उतना ही उपयोगी होगा।

(4) व्याख्या एवं आस्वादन।

(5) विद्यार्थियों द्वारा सुपाठ।

(6) कण्ठाग्र करना एवं अन्य साधनों द्वारा अभिव्यक्ति।

मुक्तक रचनाओं में प्रायः एक ही अन्विति रहती है। अतः सम्पूर्ण कविता को लेकर ही शिक्षण-कार्य करना चाहिए। पन्त, महादेवी तथा दिनकर आदि आधुनिक कवियों की संकलित रचनाएँ इसी कोटि की हैं। दोहे, पद तथा मुक्तक छन्द भी इसी कोटि में आते हैं। लम्बी कविताओं को अन्वितियों में बाँटने की आवश्यकता भी होगी।

छात्रों के रसास्वादन में सहायता प्रदान करने और उसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिये गये हैं। शिक्षकों को उनसे सहायता लेनी चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रश्न तथा अभ्यास बना लेने चाहिए। ललित अंशों का चयन और लालित्य के कारण बताना, भावार्थ लिखना, अप्रस्तुतों पर विचार करना, विशेषण-विपर्यय, लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक प्रयोगों की विशेषता बताना अभिव्यक्ति के विविध रूप हैं। समन्वयात्मक पंक्तियाँ ढूँढ़ना, कण्ठस्थ करना, अन्त्याक्षरी करना एवं कवियों की वेश-भूषा में सुपाठ करना भी सहायक होता है।

कवि की शैली की ओर भी छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया जाय। कवि के सामान्य परिचय में कवि की भाषा-शैली तथा अन्य विशेषताएँ भी उदाहरण देकर बतायी जायँ और छात्रों को उसकी रचनाओं का परिचय देकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

रस, अलङ्कार एवं छन्दों की सामान्य जानकारी होना भी हाईस्कूल स्तर के लिए निर्धारित है। इसके लिए परिभाषा और उदाहरण कण्ठस्थ कर लेना मात्र पर्याप्त नहीं है। उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि काव्य-सौन्दर्य के बोध में इनका क्या योगदान है। शिक्षण-क्रम में भी इन सौन्दर्य तत्त्वों की ओर निरन्तर ध्यान आकृष्ट करते रहना चाहिए।

हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय भी छात्रों को देना है। इसके अन्तर्गत विभिन्न काव्यों की सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान, प्रमुख कवियों और उनकी प्रमुख रचनाओं से परिचय कराना अपेक्षित है। प्रमुख काव्य-रूपों और विधाओं के विकास का सामान्य ज्ञान भी अपेक्षित होगा। इस परिप्रेक्ष्य में पाठ्य-पुस्तक के कवियों के योगदान और उनके स्थान का भी संक्षिप्त विवेचन हो जाना चाहिए और उनके जीवन तथा उनकी रचनाओं का कुछ विस्तार के साथ अध्ययन आवश्यक है।

शिक्षण से सम्बन्धित सामान्य बातों का ही यहाँ संकेत किया गया है। स्थानीय परिस्थितियों और कार्य की सीमाओं को देखते हुए शिक्षकों को अपने विवेक का सहारा सदैव लेना पड़ेगा।